सर्वजन सर्व देवता पूजा पद्धति
पारायण श्लोक

SHRI KANCHI KAMAKOTI PEETAM

No. 1, Salai Street, Kanchipuram-631 502, Tamilnadu, India

Phone: 04112-222115 Fax: 04112-224305

email: kanchimutt@vsnl.com   www.kamakoti.org
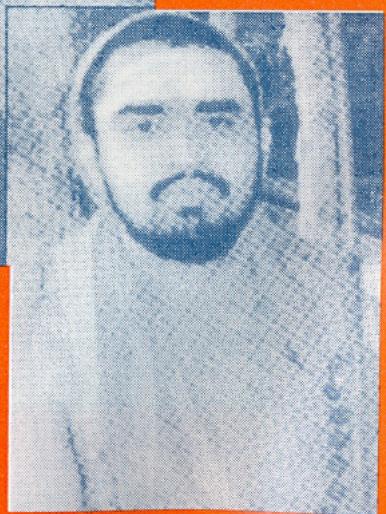
प्रातः स्मरणीय श्लोक

१. कराग्रे वसते लक्ष्मी करमध्ये सरस्वती ।
करमूले तु गौरी स्यात् प्रभाते करदर्शनम् ।।

२. समुद्रवसने देवि पर्वतस्तनमण्डिते ।
विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे ।।

३. अहल्या द्रौपदी सीता तारा मन्दोदरी तथा
पन्च कन्या : स्मरेरन्नित्यं महापातकनाशनम् ।।

४. पुण्यश्लोकोबलो राजा पुण्श्लोको युधिष्ठिरः ।
पुण्यश्लोका च वैदेही पुण्यश्लोको जनार्दनः ।।

५. कार्कोटकस्य नागस्य दमयन्त्या : नलस्य च ।
ऋतुपर्णस्य राजर्षे : कीर्तनं कलिनाशनम् ।।

६. अश्वत्थामा वलिर्व्यासः हनुमंश्च विभीषणः ।
कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरंजीविन।।

७. ब्रह्मा मुरारीस्त्रिपुरान्तकश्च भानुश्शशी भूमिसुतोबुधश्च ।
गुरुश्च शुक्रशशनिरहुकेतवः कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातृम ।।

८. भृगुर्वसिष्ठः ऋतुरडिंगराश्च मनुः पुलस्त्यः पुलहश्च गौतम।ः
रैभ्यो मरीचिश्च्यवनोऽय दक्षः कुर्वन्तु सर्व मम सुप्रभातम्।।

९. सनत्कुमारश्च सनन्दनश्च सनातनोप्यासुरिसिंहलौ च ।
सप्तस्वरास्सप्त रसातलानि कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।।

१०. सप्तार्णवाः सप्तरसातलाश्च
सप्तर्षयो द्वीपवनानि सप्त ।
भूरादिलोका : भुवनानि सप्त,
कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।।

११. पृथ्वी सगन्ध सरसास्तथाप : ।
स्पर्शश्च वायुर्ज्वलितं च तेज :,
नभस्सशब्द महता सहैव,
कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ।।

१२. गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्र गुरवेनमः ।।

स्नानारंभ के समय पठनी श्लोक

१३. अतिक्रूर महाकाय कल्पान्तदहनोपम ।
भैरवाय नमस्तुभ्यं अनुज्ञां दातुमर्हसि ।।

१४. गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ।
नर्मदे सिन्धु कावेरी जले स्मिनू सन्निधिं कुरू ।।

१५. गंगे गंगेति यो ब्रूयात् योजनानां शतैरपि ।
मुच्यते सर्वपापेभ्यः विष्णुलोकं स गच्छति ।।

स्नान के पश्चात् तिलक लगाकर साष्टांग सूर्य नमस्कार करना

१६. मित्राय नमः रवये नमः
सूर्याय नमः भानवे नमः
खगाय नमः पूष्णे नमः
हिरण्यगर्भाय नमः मरीचये नमः
आदित्यिया नमः सवित्रे नमः

अर्काय नमः भास्कराय नमः
श्रीच्छायासंज्ञासमेत श्रीसूर्यनारायणास्वामिने नमः ।।

भोजन के समय पठनमीय श्लोक

१७. अन्नपूर्णे सदापूर्णे शकरप्राणवल्लभे ।
ज्ञानवैराग्य सिद्धयर्थ भिक्षां देहि च पार्वति ।।

१८. अहं वैश्रवानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रितः ।
प्राणपानानसमायुक्तः पचाम्यन्नं चतुर्विधम् ।।
भिक्षां देहि कृपावलम्ब नकरी मात त्रपूर्णेश्वरी ।।।

घर से बाहर चलते समय स्मरणीय श्लोक

१९. वनमाली गर्दी शागी शडी चक्री च नन्दकी ।
श्रीमान् नारायणो विष्णुर्वासुदेवोऽभिरक्षतु ।।

शयन के पूर्व स्मरणीय श्लोक

२०. अगस्तिर्माधवश्चैव मुचुकुन्दो महाबलः ।
कपिलो मुनिरस्तीकः पन्चैते सुखशायनिः ।।

२१. अच्युतं केशवं विष्णुं हरिं सोमं जनार्दनम।
हंसं नारायणं कृष्णं जपेत् दुःस्वप्नशान्तये ।

२२. ब्रह्माणं शंकरं विष्णुं यमं रामं दनुं बलिम् ।
सप्तैतान् यः स्मरेन्नित्यं दुःस्वप्नस्तस्य नश्यति ।।

१. सर्वजन सर्व देवता पूजा पद्धति

संसार में कई प्रकार के प्राणी होते हैं। उनमें मनुष्य रूपी प्राणी सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। पूर्व कर्म के पुण्य-प्रताप से मनुष्य जन्म प्राप्त होता है। इसलिए मनुष्य को चाहिए कि अपना समय व्यर्थ न गंवायेऔर अपने लोकिक और पारलोकिक जीवन को ऐसा संवारे कि धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष नाम के चतुर्विघ फल पुरुषार्थों को प्राप्त कर अपने जीवन को कृतार्थ करें। ईश्वर ने मनुष्य को जन्म से ही बुद्धि, हाथ, मुंह और पैर जैसे ज्ञानेन्द्रिय तथा कर्मेन्द्रिय प्रदान किये हैं। इनका सदुपयोग करना हर मनुष्य का कर्तव्य है। ईश्वर की आराधना इसमें प्रमुख है। क्योंकि मनुष्य जीवन में ही ईश्वर की आराधना और पूजा-पाठ करने का सुयोग प्राप्त होता है। हम देखते हैं कि ईश्वर की सृष्टि में मनुष्य के अलावा भी कितने ही प्राणी होते हैं। उनके भी हाथ, पैर, मुंह जैसे अवयव होते हैं। वे अपन हाथों की मदद से खा सकते हैं, पैरों की मदद से चल-फिर सकते हैं और मुंह की मदद से आवाज निकाल सकते हैं। पर न मुंह से ईश्वर का नाम ले सकते हैं और न हाथों से उसकी पूजा या अर्चना ही कर सकते हैं।

परब्रह्म रूप भगवान ही एक ऐसे हैं जो परिपूर्ण और परमानन्दमय हैं। उन्हें अपने सुख-दुख की आंख-मिचौली नहीं खेलनी पड़ती। पर सुख-दुख की आंखमिचौली खेलने वाला मनुष्य चाहता है कि उसे सुख पर सुख प्राप्त होता रहे। इसलिए उसे चाहिए कि परमसुखमय भगवान की आराधना करे। इस प्रकार देखा जाए तो ईश्वर की उपासना हर मनुष्य के जीवन का अंग हो जाता है।

ईश्वर की आराधनाअपने ही नहीं ग्राम, नगर देश और समचे लोक के कल्याण के लिए आवश्यक है। सार्वजनिक मन्दिरों में भगवान की आराधनाअर्चक पुजारियों के द्वारा की जानी ाहिए। परन्तु व्यक्ति-विशेष के घरों में विशिष्ट पूजा-स्थल में बैठकर देवता - पूजन व्यक्तिगत रूप से करना चाहिए।

हमारे हिन्दु समाज में निराकार निर्गुण ब्रह्म को साकार सगुण रूप देकर पूजने की प्रथा प्रचलित हो गयी है। इसलिए कि सगुण सरूप की पूजा सुलभ और सुगम है। इस सिलसिले में विभिन्न मूर्तियों की पूजा का प्रचलन भी हो गया। इस सगुण उपासना से ऐहिक सुख ही क्यों, पारमार्थिक सुख भी प्राप्त हो सकता है।

आराधना का दूसरा नाम पूजा - पाठ और उपासना भी होता है। यह पूजा भी दो प्रकार की होती है। एक ब्रह्म पूजा और दूसरी आंतरिक या मानसिक पूजा। ब्रह्म पूजा के लिए पूजा सामग्री की जरूरत होती है। पर आंतरिक या मानसिक पूजा के लिए मनोभावना मात्र पर्याप्त है। प्रत्यक्ष पूजा से पूजा सामग्री की जरूरत नहीं पड़ती मानसिक पूजा जरा कठिन हाती है। इसलिए पारिवारिक गृहस्थों के लिए ब्राह्म पूजा का विधान है। ब्राह्म पूजा मेंआराध्य वस्तु मूर्त प्रतिमा या चित्र रूप में हो सकती है।

तीर्थ पात्र में थोड़ा जल, पुष्प, चंदन, अक्षत - रोली, यथा संभव दूध, नैवेद्य के लिए गुड़, द्राक्षा फल और महानैवेद्य के रूप मेंअन्न इनका प्रबन्ध कर लेना चाहिए।

पूजा करने वाले ग्रहस्थ को चाहिए कि पूरब या उत्तर की ओर मुंह करके बैठे ताकि आराध्य मूर्ति का मुख उसकी ओर रहे। यानि मूर्ति का मुंह दक्षिण या पश्चिम की ओर रहे।

जहां तक हो सके, रोज सिर से नहा लेना अच्छा है। विवशत की हालत में कंठ तक स्नान करना काफी होता है। स्नान के उपरांतअपने रीति-रिवाज के अनुसार भस्म, सिंदूर या चंदन का तिलक धारण करके उपरोक्त पूजा सामग्रियों के साथ पूजा के लिए बैठना चाहिए।

भगवान के सामने अपने आसन पर बैठने के बाद आचमन करना चाहिए। "केशवाय स्वाहा, नारायणाय स्वाहा, माधवाय स्वाहा" कहकर तीन बार हथेली में थोड़ा पानी लेकर पीना आचमन कहा जाता है।

पूजक को चाहिए कि पद्मासन लगाकर बैठे। फिर दायें घुटने पर बायें हाथ की हथेली उन्मुख रखकर उस पर दायीं हथेली को ढक्कन जैसा बना ले और संकल्प करे।

ममोपात्त समस्त दुरितक्षय द्वारा

श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थम्....................

कहने केबाद अपने आराध्य देवता का नाम लें। जैसे श्री कृष्णस्वामी प्रसाद सिद्धयधम्, श्री सुब्रहाण्य स्वामी प्रसाद सिद्धयर्थम्।

इष्ट काम्यार्थ सिद्धयर्थम्,

साम्राज्य सिद्धयर्थम् ।

यहां पर आपने आराध्य देवता का नाम लेकर "आराधनं करिष्ये" कहे। इसके बाद थोड़ा पानी लेकर हाथ पोंछे। फिर तीर्थ पात्र के जल में फूल भिगोकर उस सजल फूल से पूजा - द्रव्यों, आराध्य देवा और अपने

ऊपर छिड़क लें। तदुपरांत हाथ में अक्षत - रोली और फूल लेकर षेडशोपचार पूजां करिष्य कहकर पूजा का प्रारंभ करे।

आगच्छ देवदेवेश मर्त्यलोक हितेच्छया ।

पूजयामि विधानेन प्रसन्नस्सुमुखो भव ।।

आराध्य देवता से पधारने की प्रार्थना करना इस श्लोक का ध्येय है।

पादासनं कुरु प्राज्ञ निर्मलं स्र्णनिर्मितम् ।

भूषितं विविधैः रत्नैः कुरु त्वं पादुकासनम् ।।

आसनं समर्पयामि कहकर आराध्य देवता पर अक्षत - रोली डालें ।

गंगादिभ्यः सुतीर्येभ्यो मया प्रार्थनयाहृतम ।

तोयमेतत्सुखस्पर्शं पाद्यार्थं प्रतिगृह्यताम् ।।

पाद्यं समर्पयामि कहकर पाद - पक्षालन के तौर पर थोड़ा पानी दे।

गन्धोदकेन पुष्पेण चन्दनेन सुगन्धिना ।

अर्घ्यं गृहाण देवेश भक्तिं मे अचलां कुरु ।।

अर्घ्यं समर्पयामि कहकर अर्घ्यं दे ।

कर्पूरोशीर सुरभि : शीतलं विमलं जलम् ।

गंगायास्तु समानीतं गृहणाचनीयकम् ।।

आचमनीयं समर्पयामि । कहकरआचमन के वास्ते थोड़ा पानी दे ।

मन्दाकिन्यास्समानीतं हेमाम्भोरुह वासितम् ।

स्नानाय ते मया भक्त्या नीरं स्वीक्रियतां विभो ।।

स्नानं समर्पयामि कहकर थोड़ा पानी आराध्य देवता पर छिड़के ।

इस समय जल, दूध, दही, मधु, पंच गव्य, फल रस आदि से भी अपनी शक्ति केअनुसार भगवान का अभिषेक किया जा सकता है। आराध्य देवता यदि चित्र रूप में हो तो छिड़कना पर्याप्त है।

वस्त्रं सूक्ष्मं दुकूलं च देवानामपि दुर्लभम्।

गृहाण त्वं प्रभो देव प्रसन्नो भव सर्वदा ।।

वस्त्रं समर्पयामिकह कर अक्षत डाले ।

यज्ञोपवीतं सहजं ब्रह्मणानिर्मित पुरा ।

आयुष्यं देव वर्चस्यं उपवीतं गृहण भो ।

यज्ञोपवीतं समर्पयाामि ।

जनेऊ पहनाये ।नहीं तो उसके स्थान पर अक्षत डाले।

श्रीखण्डं च दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् ।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ मछ्दतं प्रतिगृह्यताम् ।।

कहकर चन्दन का तिलक लगाये। गन्धन् धारयामि

अक्षतान् चन्द्रवर्णाभान्शालेयान्सलिलान् शुभान् ।

अलंकारार्थमानीतान्धारयस्व महाप्रभो ।।

अक्षतान् समर्पयामि

अराधना की मूर्ति कोअक्षत से सजाये ।

इसके बाद अपनी सुविधा के अनुसार अष्टोत्तरशत नामावलि या सप्तनामावलि से भगवान की अर्चना कर सकते हैं। नाम लेते वक्त हर बार भगवान पर एक-एक फूल चढ़ाना चाहिए। सुविधा या समय केअभाव में अराध्य देवता का नामआठ बार लेकर फूल चढ़ाया जा सकता है।

बनस्पति रसोद्भूतः गन्धाढयः सुमनोहरः ।

आग्रेयः सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम ।।

धूपं समर्पयामि आघ्रापयामि कहकर धूप दिखाये ।

साज्यं त्रिवर्ति संयुक्तं बहिन्ना योजितं मया ।

दीपं गृहण देवेश त्रैलोक्य मिमिरापहम् ।।

दीपं समर्पयामि दर्शयामि कहकर दीपाराधना करे।

नैवद्यं गृह्यतां देव भक्ति मच्यचलां कुरु ।।

मयीप्सितं वरं देहि परत्र च परा गतिम्

नैवेद्य समर्पयामि निवेदयामि कहकर दूध, फल, जल और अन्न का निवेदन करे ।

पूगीहफलं महछिव्यं नागवल्या दलैर्युतम् ।

कर्पूर चूर्ण संयुक्त तांबूलं प्रतिगृह्यताम् ।।

तांबूलम् समर्पयामि कहकर पान सुपारी का निवेदन करे।

सक्षुद्रं सर्वलोकानां तिमिरस्य निवारणम् ।

आर्तिक्यं कल्पितं भक्त्या गृहाण त्वं सुरेश्वर ।।

नीराजनं समर्पयामि दर्शायामि कहकर कपूर की आरती उतारे ।

फलेन फलितं सर्व त्रैलोक्यं सचराचरम् ।

तस्मात्फल प्रदानेन सफलाश्च मनोरथाः ।।

कहकर मंत्र पुष्प चढ़ाये । मन्त्रपुष्पं समर्पयामि

यानि कानि च पापानि ब्रह्महत्यासमानि च ।

तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे।।

कहकर तीन बार देवता की परिक्रमा करे और आराधना की मूर्ति पर पुष्प और अक्षत चढ़ायें।

मन्त्रिहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर ।

यत्पूजितं मयादेव परिपूर्ण तदस्तु ते ।

अपराध सहस्राणि क्रियन्तेहर्निशं मया ।

दासोऽय इति मां मत्वा क्षमस्व पुरुषोत्तम ।।

कहकर नमस्कार करे । प्रदक्षिण नमस्कारान् समर्पयामि

उसके बाद छत्रं धारयामि, चारं वीजयामि, नृत्यं नर्तयामि, वाद्यं घोषयामि, आंदोलिकां आरोहयामि, समस्त भक्त्योपचार, रजापचार, शम्यत्योपचार पूजा समर्पयामि कहकर पुष्प और अक्षत से अराध्य की पूजा करे । उसके बाद "अनेन पूजनने भगवान् ...... सुप्रसन्नो भक्तु। भगवतुप्रसाद सिद्धिरस्तु" कहकर अक्षत - फूल पानी के साथ भगवान के सामने समर्पित करे। पूजा के अंत में, प्रारंभ में कहे अनुसार आचमन करे।

२. पारायण श्लोक

१. शुक्लांम्बरधरं विष्णु शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्न्वदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये ।।

२. भूषिकवाहन मोदकहस्त चामरकर्ण विलंबित सूत्र ।
वामनरूप महेश्वरपुत्र विघ्नविनायक पाद नमस्ते ।।

३. अगजानन पद्मार्क गजाननमहर्निशम् ।
अनेकदं तं भक्तानां एकदन्तमुपास्महे ।।

४. गजाननं भूतगणादिसेवितं,
कपित्थजम्बूफलसार भक्षितम्
उमासुतं शोकविनाशकारकं,
नमामि विघ्नेश्वरपादपकजम् ।।

५. वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ ।
अविघ्नं कुरु में देव सर्वकार्येषु सर्वदा ।।

६. मयुराधिरूढं महावाक्यगूढं,
मनोहारि देहं महाच्चित्तगेहम् ।
महीदेवदेवं महावेदभावं
महादेवबालं भजे लोकपालम् ।।

७. अषस्मार कुष्ठक्षयार्शः प्रमेह
ज्वरोन्मादगुल्मादिरोगा महान्तः ।
पिशाचाश्च सर्वे भवत्न्भूतिं
विलोक्य क्षणात्तारकारे द्रवन्ते ।

८. ब्रह्मामुरारि सुरार्चितलिंग निर्मल भासित शोभितलिंगम् ।
जन्मज दुख विनाशकलिंग तत्प्रणमामि सदाशिलिङग्मम् ।।

९. करचणकृतं वा कर्म वाक्यकायजं वा
श्रवणनयनजं वा मानसं वाऽपराधम् ।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व
शिवशिव करुणाब्धे श्रीमहादेव शंभो ।।

१०. नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भस्मागरागाय महेश्वराय ।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय तस्मे नकाराय नमशिशवाय ।।

११. मन्दाकिनी सलिल चन्दन चर्चिताय
नन्दीश्वर प्रमथनाथ महेश्वराय ।
मन्दार मुख्यबहुपुष्पसु पूजिताय
तस्मै मकाराय नमशिशवाय ।।

१२. शिवाय गौरीवदनारविन्द सूर्याय दक्षाध्वर नाशकाय ।
श्रीनीलकण्ठाय वृष्ध्वजाय तस्मैशिकाराय नमशिक्षवाय ।।

१३. वसिष्ठकुम्भोद्भवगौतमादि मुनीन्द्र देवार्चित शेखराय ।
चन्द्रार्क वैश्वानरलोचनाय तस्मै वकाराय नमशिवाय ।।

१४. यक्षस्वरूपाय जटाधराय पिनाकहस्ताय सनातनााय ।
विव्याय देवाय दिगम्बराय तस्मै यकाराय नमशिशवाय ।।

१५. शान्ताकारं भुजगशयनं पद्यनाभं सुरेशम्
विश्वाकारं गगनसदृशं मेघवर्ण शुभागम् ।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिह्यद्ध्यानगम्यं
वन्दे विष्णं भवभयहरं सर्वलोकैक नाथम् ।।

१६. मेघश्यामं पीतकौशयवासं
श्रीवत्साग्रम् कौस्तुभोद्भासितितागम ।
पुण्योपेतं पुण्डरीकायताक्षं
विष्णु वन्दे सर्वलोकैक नाथम् ।।

१७. सशडचक्रं सकिरीटकुण्डलं
सपीतवस्त्रं सरसीरुहेक्षणम् ।
सहारवक्षस्थल शोभि कौस्तुभं
नमामि विष्णु शिरसा चतुर्भुजम् ।।

१८. आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसंपदाम् ।
लोकाभिराम श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम् ।।

१९. आर्तानामार्तिहन्तारं भीतानां भीतिनाशनम् ।
द्विषतां कालदंडं तं रामचन्द्रं नमाम्यहम् ।।

२०. रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे ।
रघानाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ।।

२१. आग्रतः पृष्ठतश्चैव पार्श्वतश्च महाबलौ ।
आकर्णपूर्ण धन्वानौ रक्षेतां रामलक्षणौ ।।

२२. करारविन्देन पदारविन्दं
मुखारविन्दे विनिवेशयन्तम् ।
वटस्य पत्रस्य पुटे शयानं
बालं मुकुन्दं भनसा स्मरामि ।।

२३. वसुदेवसुतं देवं कंसचाणूरमर्दनम्
देवकी परमानन्दं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम् ।

२४. नित्यानन्दकरी वराभयकरी सौन्दर्य रत्नाकरी ।
निर्धूताखिल घोरपावनकरी प्रत्यक्षमाहेश्वरी ।।
प्रालेयालवंशपावनकरी काशीपुराधीश्वरी ।
भीक्षांदेहि कृपावलम्बनकरी मातन्नपूर्णेश्वरी ।।

२५. अन्नपूर्णे सदापूर्णे शंकराप्रणावल्लभे ।
ज्ञानवैराग्य सिद्धयूर्थ भिक्षां देहि च पार्वति ।

२६. अयिगिरिनन्दिनि नन्दितमेदिनि विश्वविनादिनि नन्दनुते ।
गिरिवरविन्ध्यशिरोधि निवासिनि विष्णुविलासिनि जिष्णुनुते ।
भगवति हे शितिकण्टकुटुम्बिनि भूरिकुटुम्बिनि भूरिकृते ।
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।

२७. सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्ति समन्विते ।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तुते ।।

२८. सिद्धिबुद्धिप्रदे देवि भुक्तिमुक्ति प्रदायिनि ।
मन्त्रामूर्ते सदा देवि महालक्ष्मी नमोऽस्तुते ।।

२९. सरस्वति नमस्तुभ्यं वरदे कामरूपिणि ।
विद्यारंभं करिष्यामि सिद्धिर्भवतु मे सदा ।।

३०. चतुर्भुजे चन्द्र कलावंतसे कुचेन्नते कुंकुमरागशोणे ।
पुण्ड्रेक्षु पाशाकश पुष्पबाण हस्ते नमस्त जगदेक मातः ।

३१. दूरीकृत सीतार्तिः प्रकटीकृत रामवैभव स्फूर्तिः ।
दारित दशमुख कीर्तिः पुरतो मम पातु हनुमतो मूर्तिः ।।

३२. बुद्धिर्बलं यशो धैर्य निर्भयत्वमरोगता।
अजाड्यं वाक्यपटुत्वं च हनुमत्स्मरणाद्भवेत्।।

३३. जपाकुसुम सकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।।
तमोऽरिं सर्वपापध्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।

३४. दधिशङ् तुषाराभं क्षीरोदार्णव संभवम्।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुट भूषणम्।।

३५. धरणीगर्भसम्भुतं विद्युक्तान्ति समप्रभम्।
कुमारं शक्तिहरतं तं मंगलं प्रणमाम्यहम्।।

३६. प्रियङ्गु कलिकाश्यामं यपेणौप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्

३७. देवानां च ऋषीणां च गुरुं कानचन सन्निभम्र।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।

३८. हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परम गुरुम्।
सर्वशास्रप्रवक्तारं भर्गवं प्रणामाम्यहम्।।

३९. नीलानजन समाभासं रविपुत्रां यमाग्रजम्।
छायामार्ताण्ड संभूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।

४०. अर्धकाय महावीर्य चन्द्रदित्य विमर्दनम्।
सिंहिका गर्भसंभूतं तं राहुं प्रणामाम्यहम्।।

४१. पलाशपुष्प संकाशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्र रौद्रात्मकं घोरं तं केतु प्रणामाम्यहम्।।

४२. श्रुतिस्मृति पुराणानामालयं करुणालयम्।
नमामि भगवत्पादं शंकरं लोकशंकरम्।।

४३. विदिताखिल शास्र सुधाजलधे,
महितोपनिषत्कथितार्थनिधे।
हृदये कलये विमलं चरणं
भव शंकर देशिक मे शरणम्।।

४४. करुणावरुणालय पालय मां,
भवसागर दुःख विदून हृदम्।
रचयाखिल दर्शन तत्वविदं,
भव शंकर देशिक मे शरणम्।।

४५. भवता जनता सुहिता भविता
निजबोध विचारण चारूमते।
कल्येश्वर जीव विवेकविंद,
भव शंकर देशिक में शरणम्।।

४६. भव एवं भवानिति मे नितरां,
समजायत चेंतसि कौतुकिता।
मम वारय मोह महाजलधिं,
भव शंकर देशिक मे शरणम्।।

४७. आदौ देवकिदेवि गर्भजननं गोपीगृहे वर्धनं
मायापूतन जीवितापहरणं गोवर्धनोद्धारणम्।
कंशच्छेदन कौरवादि हननं कुन्तीसतोपालन।
होतद्भागवतं पुराण कथितं श्रीकृष्णलीलामृतम्।।